क. हार का कारण (यहोशू 7:1-5, 10-13)

- यरीहो भेजे गए जासूसों से अनुकूल रिपोर्ट मिलने के बाद, यहोशू ने परमेश्वर से परामर्श किया और उससे शहर पर कब्ज़ा करने की रणनीति प्राप्त की।
- यदि ऐ को भेजे गए जासूसों से रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद यहोशू ने वैसा ही किया होता, तो 36 लोगों की मृत्यु टाली जा सकती थी (यहोशू 7:1-5)।
- परन्तु हार का वास्तविक कारण क्या था, या फिर परमेश्वर ने यहोशू को ऐ पर आक्रमण न करने के लिए क्यों कहा (यहोशू 7:11)?
- परमेश्वर ने देखा था कि "इस्राएल ने पाप किया है। " बाइबल में कहीं भी पाप का इतनी सूक्ष्मता से वर्णन नहीं किया गया है: "उन्होंने उल्लंघन किया है… उन्होंने ले लिया है… उन्होंने चोरी की है… उन्होंने झूठ बोला है… उन्होंने उन्हें अपने सामान में रख लिया है। "
- बहुवचन पर ध्यान दें। पाप एक व्यक्ति ने किया था, लेकिन परमेश्वर ने पूरी प्रजा को ज़िम्मेदार ठहराया। उन्होंने वाचा तोड़ी थी; पाप को जड़ से उखाड़ना ज़रूरी था ताकि उसे बहाल किया जा सके।

ख. निराश और पीड़ित (यहोशू 7:6-9)

- यहोशू और पुरनिये ऐ की हार से निराश थे, और उन्होंने शोक के स्पष्ट संकेत दिखाए (यहोशू 7:6)।
- तब यहोशू उसी तरह की क्रोध भरी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है जैसी इस्राएलियों ने अपने 40 वर्षों के भटकने के दौरान बार-बार व्यक्त की थी: "तू हमें क्यों पार ले आया...? काश हम वहीं रहने में संतुष्ट होते...!" (यहोशू 7:7)।
- हालाँकि, यहोशू की भावना जंगल में रहने वाले इस्राएलियों जैसी नहीं थी। उसकी शिकायत निराशा से प्रेरित नहीं थी, बल्कि इस डर से थी कि अन्यजातियों के बीच परमेश्वर के नाम का अपमान होगा (यहोशू 7:8-9)।
- उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा कि अविश्वासी लोग परमेश्वर के चरित्र की व्याख्या उसके लोगों के आचरण के आधार पर करेंगे। आज हम संसार में परमेश्वर की गवाही बने हुए हैं। यह कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है!

ग. अपराधी का पता लगाना (यहोशू 7:14-19)

- सामूहिक पाप (पूरी प्रजा के अपराध) को मिटाने के लिए, पापी को मिटाना ज़रूरी था (यहोशू 7:15)। मिटा दिया जाना? अगर वह पश्चाताप करे, तो क्या उसे माफ़ नहीं किया जाएगा? बेशक परमेश्वर ऐसा करेगा! लेकिन आकान ने सच्चे मन से पश्चाताप करने का कोई संकेत नहीं दिखाया (और ऐसा करने के उसके पास बहुत सारे अवसर थे)।
  - जाँच प्रक्रिया की घोषणा की गई और उसे अगले दिन तक के लिए स्थगित कर दिया गया (यहोशू 7:14-15)। *आकान चुप रहा*
  - यहूदा का गोत्र पकड़ा गया (यहोशू 7:16)। *आकान चुप रहा*
  - जेरहवंशियों का कुल पकड़ा गया (यहोशू 7:17ए)। *आकान चुप रहा*
  - अगुआ जब्दी पकड़ा गया (यहोशू 7:17बी)। *आकान चुप रहा*
  - यहूदा गोत्र का आकान पकड़ा गया (यहोशू 7:18)। *आकान चुप रहा*
- ईश्वरीय दया और प्रेम को दर्शाते हुए, यहोशू ने आकान से अपने पाप को स्वीकार करने के लिए कहा (यहोशू 7:19)।
- आकान मुकदमा हार गया। उसने अपना अपराध स्वीकार किया, पर क्षमा नहीं माँगी (यहोशू 7:20)। फिर भी परमेश्वर ने उसके हृदय की कठोरता पर शोक किया, जो पश्चाताप की हर पुकार में स्पष्ट दिखाई देती थी।

घ. आकान का पाप (यहोशू 7:20-26)

- यहोशू ने आकान से परमेश्वर की महिमा करने और अपने पाप को स्वीकार करने के लिए कहा (यहोशू 7:19)। यह उसका आखिरी मौका था। काश उसने अपना गुनाह कबूल करते समय क्षमा माँग ली होती...परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, और उसके लिये कोई क्षमा नहीं थी। (गिनती 15:30-31)
- हव्वा की तरह, आकान ने भी "देखा," "इच्छा की," और "ले लिया," और उसके पाप का असर बहुतों पर पड़ा (उत्पत्ति 3:6)। हनन्याह और सफ़ीरा की तरह, आकान ने भी परमेश्वर को समर्पित कुछ शापित वस्तुओं को ले लिया और उसकी कीमत चुकानी पड़ी (प्रेरितों 5:1-2)।
- यरीहो में आकान द्वारा लिये गये निर्णय राहाब द्वारा लिये गये निर्णयों के बिल्कुल विपरीत थे:

राहाब	उसने जासूसों को छत पर छिपा दिया	उसने इस्राएल के प्रति दयालुता दिखाई	अपने विश्वास के कारण उसने विजय का पक्ष लिया	उसने इस्राएल के साथ एक वाचा बाँधी	उसने अपने और अपने परिवार के प्राणों की रक्षा की
आकान	उसने लूटा हुआ सामान ज़मीन में छिपा दिया	इससे इस्राएल पर मुसीबत आई	उसने अपने कामों से इस्राएल को परास्त किया	उसने इस्राएल की वाचा तोड़ी	वह अपने परिवार के साथ मारा गया

ङ. फिर से विजयी (यहोशू 8:1-29)

- यरीहो की तरह, परमेश्वर ने यहोशू को ऐ पर विजय पाने की रणनीति प्रदान की (यहोशू 8:1-2)।
- रात के समय, शहर के पीछे घात लगाकर हमला किया गया। भोर होते ही, सेना ऐ के पास पहुँची और फिर उनके सामने से भागने का नाटक किया।
- जैसे मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से अमालेकियों पर विजय पाने तक अपनी लाठी को उठाया, वैसे ही यहोशू ने अपना "हथियार" (संभवतः मिस्रियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला बर्छा) उठाया और उसे तब तक उठाए रखा जब तक उसे पूर्ण विजय नहीं मिल गई (यहोशू 8:18-22, 26)।
- परमेश्वर एक बार फिर अपने लोगों को विजय दिला रहा था। आकोर घाटी, जहाँ आकान और उसके परिवार का पथराव किया गया था, ने विजय का द्वार, एक "आशा का द्वार" खोल दिया (होशे 2:15)।
- जब हम विश्वास के द्वारा ईश्वरीय क्षमा स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर हमारे पाप को आकोर में दफना देता है, और आशा का द्वार खोल देता है।